47

बच्चों को आशीष देना

(19:13-15)

यह दृश्य विवाह पर यीशु की चर्चा की स्वाभाविक पैरवी है (19:1-12)। क्या इसे यहां कालक्रम के कारण के बजाय विषय के कारण रखा गया? हम पक्का नहीं बता सकते। लूका ने इस दृश्य को फरीसी और चुंगी लेने वाले के दृष्टांत के बाद रखा है (लूका 18:15-17)। मत्ती के पिछले भाग में यीशु ने चेलों को सिखाने के लिए सबक के रूप में एक बालक का इस्तेमाल किया था (18:1-6, 10); परन्तु यहां पर बच्चों की बात उन्हीं के खातिर की गई है।

बच्चों का आना (19:13क)

[13क]तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे।

आयत 13क। यहां पर **बालकों** के लिए इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द (*paidion* से) आम तौर पर नवजात शिशुओं और नन्हें बालकों के लिए किया जाता है। परन्तु कुछ संदर्भों में इस शब्द का इस्तेमाल बड़े बच्चों के लिए, कम से कम बारह वर्ष की आयु के बच्चों के लिए किया गया है (मरकुस 5:39, 42)। लूका कहता है कि "लोग बच्चों को भी उसके पास लाने लगे" (लूका 18:15)। हो सकता है कि विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों को यीशु के **पास लाए** हों। मरकुस और लूका दोनों में अधूरा वाक्य, "लोग लाने लगे" इस बात का संकेत देता है कि उस समय उसके पास बच्चों का आना जारी था (मरकुस 10:13; लूका 18:15)।

माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को यीशु के पास लाने के कारण का संकेत दिया गया है: **कि वह उन पर हाथ रखे और** उनके लिए **प्रार्थना करे**। बच्चों के ऊपर हाथ रखने की प्रथा याकूब के जितनी पुरानी है, जिसने अपने परपोतों के ऊपर हाथ रखे थे और उन्हें आशीष दी थी (उत्पत्ति 48:14-16)। यीशु के समय में भी यह प्रथा रही होगी। बच्चों को रब्बियों के पास और अन्य प्रसिद्ध गुरुओं के पास उन पर हाथ रखकर आशीष देने के लिए लाया जाता होगा।[1] टालमुड की एक छोटी सन्धि की बाद की एक परम्परा इस विचार का समर्थन करती है:

> इसी प्रकार से यरूशलेम में अपने छोटे बेटों और बेटियों को उपवास के दिन अपने आपको दुख देने के लिए प्रशिक्षित करने की एक सुन्दर प्रथा थी: ग्यारह वर्ष की आयु में दिन के मध्य तक, बारह वर्ष की आयु में पूरा दिन और तेरह वर्ष की आयु में [लड़के को] घुमाया जाता और हर ऐल्डर के सामने उसे आशीष देने और उसके लिए प्रार्थना करने के लिए ले जाया जाता था ताकि वह तौरेत का अध्ययन करने और शुभ कर्मों में लगा रहने के योग्य हो जाए।[2]

यीशु के पास अपने बच्चों को लाने वाले माता-पिता उनके लिए बेहतरीन चीज़ें चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि उनके बेटों और बेटियों को महान गुरु यीशु की करुणामय स्वीकृति और प्रोत्साहन मिल जाए।

चेलों की प्रतिक्रिया (19:13ख)

13ख पर चेलों ने उन्हें डांटा।

आयत 13ख। यीशु के पास बहुत से बच्चों को लाया जाना इस बात कि **चेलों** को इतनी चिंता का कारण हो सकता है, जिस करके और वे लोगों को आने से रोकना चाहते थे। इस्तेमाल की गई भाषा से संकेत मिलता है कि चेलों की प्रतिक्रिया गम्भीरतापूर्वक थी। **डांटा** (*epitimaō* से) में धमकाने का विचार हो सकता है। चेलों के ऐसा करने का कारण हैरान करने वाला है, क्योंकि यीशु ने पहले दीनता पर सबक देने के लिए एक बच्चे का इस्तेमाल किया था (18:1-4)। उन्हें लगा होगा कि यीशु का सिखाने और चंगाई देने का काम इन बच्चों को ग्रहण करने से अधिक महत्वपूर्ण है या ये लोग यीशु को यरूशलेम में जाने में देरी का कारण बन रहे थे।

यीशु की आशीष (19:14, 15)

14यीशु ने कहा, ''बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।'' 15और वह उन पर हाथ रखकर, वहां से चला गया।

आयत 14. जब माता-पिता अपने बच्चों को आशीष देने के लिए **यीशु** के पास लाते थे तो वह उन्हें बड़े अनुग्रह से ग्रहण करता था। उसने अपने चेलों से कहा, **''बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो।''** डांटने वालों को ही डांट मिल गई थी। प्रभु उनके साथ ''क्रुद्ध'' था (मरकुस 10:14)। उसने चेलों को पहले ही समझाया था कि जो भी कोई स्वर्ग में जाना चाहता है उसे ''फिरना और बालकों के समान बनना'' आवश्यक है (18:3)। उसने आगे कहा कि **स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।** अन्य शब्दों में, स्वर्ग का राज्य उन लोगों से भरा होगा जिनका छोटे बच्चों की तरह भरोसा और विनम्र स्वभाव है।

यह आयत नवजात शिशुओं के बपतिस्मे को उचित नहीं ठहराती; वास्तव में यह इसे नकारती है। यीशु ने इन बच्चों को बपतिस्मा नहीं दिया; उसने केवल उनके ऊपर हाथ रखे और उन्हें आशीष दी। नवजात शिशुओं के बपतिस्मे की डॉक्ट्रिन या शिक्षा यहां पर या नये नियम में कहीं भी नहीं मिलती। पवित्र शास्त्र में ऐसा किया जाने का कोई भी उदाहरण नहीं है। कारण स्पष्ट है कि नवजात शिशु पाप के दोषी नहीं हैं, और बपतिस्मा ''पापों की क्षमा के लिए'' है (प्रेरितों 2:38)। नवजात शिशु विश्वास और मन फिराव और अंगीकार करने के योग्य नहीं हैं, जो कि बपतिस्मे के लिए पूर्व शर्त है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 8:36-38; रोमियों 10:9, 10)।

नवजात शिशुओं के बपतिस्मे की प्रथा तीसरी शताब्दी ई. में आरम्भ हुई। जनाजे के कई शिलालेखों और अन्य प्रमाणों की समीक्षा करने के बाद, एवरेट फर्ग्यूसन ने निष्कर्ष निकाला कि नवजात शिशुओं का बपतिस्मा माता पिता को उस समय आश्वासन देने के लिए बनाया गया था

जब नवजात शिशुओं की मृत्यु दर बहुत अधिक थी। यह समझते हुए कि उनके बच्चे अधिक देर तक जीवित नहीं रहेंगे, वे यह जानना चाहते थे कि उनके नन्हे-मुन्हे परमेश्वर के राज्य का भाग हों, जिस कारण वे उनका बपतिस्मा करवा देते थे।[3] परन्तु परमेश्वर ने अपने वचन में इस प्रकार के आश्वासन का अधिकार नहीं दिया। हमें उनकी देखभाल का काम उसकी स्नेहपूर्ण वफ़दारी पर छोड़ देना चाहिए।

आयत 15. चेलों को डांटने के बाद यीशु ने बच्चों **पर हाथ रखकर** उन्हें आशीष दी। मरकुस यीशु के उन्हें अपनी बाहों में लेने का सजीव चित्रण शामिल करता है (मरकुस 10:16)। उसने बच्चों के लिए माता-पिता की विनती के अनुसार प्रार्थना भी की होगी (19:13)। बच्चों को आशीष देने के इस समय के बाद **वह वहां से** कहीं और **चला गया**।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

बच्चों को आशीष देना (19:13-15)

माता-पिता जो अपने बच्चों के लिए बेहतरीन की इच्छा रखते थे यीशु के पास उसकी आशीष पाने के लिए उन्हें लेकर आए। चाहे वे प्रेरितों से निराश हो गए पर वे उसके पास आने से रुके नहीं। अन्त में यीशु ने उनके बच्चों को आशीष दी और उन पर प्रार्थना की। आज मसीही माता पिता अपने बच्चों के लिए बेहतरीन की इच्छा रखते हैं। ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा हम अपने बच्चों को यीशु के पास उससे आशिर्षे पाने के लिए ला सकते हैं: (1) उनके साथ समय बिताएं, (2) उनके लिए अनुकरणीय नमूना बनें, (3) उन्हें परमेश्वर का वचन बताएं, (4) उन्हें बाइबल क्लास तथा आराधना सभा में ले जाएं , (5) उनके लिए प्रार्थना करें और (6) उन्हें मसीह के राज्य के सेवक बनने के लिए प्रोत्साहित करें।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 282. [2]टालमुड *सोफरिम* 18.5. [3]एवरेट फर्ग्यूसन, ''इंस्क्रिप्शंस एण्ड द ओरिजिन ऑफ इन्फैंट बैपटिज़्म,'' *जरनल ऑफ थियोलॉजिक्ल स्टडीज* एन. एस. 30 (अप्रैल 1979): 46.